www.ccsuniversity.ac.in

प्रायोगिक समाचार पत्र | चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ

परिसर

वर्ष:00 अंक : 12
मेरठ, माह जनवरी 2021 से अगस्त 2021 तक,
पृष्ठः 8, विशेषांक
मूल्य : निःशुल्क

देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें 3

पुण्यतिथि पर बाबू जगजीवन राम का स्मरण 5

राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत को करेगी जाग्रतः आनंदीबेन 8

- विश्वविद्यालय के 9 मार्च को आयोजित हुए दीक्षांत समारोह में मेडल प्राप्त छात्र-छात्राओं के साथ उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. दिनेश शर्मा, मुख्य अतिथि गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एम.एन. पटेल और चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर एन.के. तनेजा। (समारोह की खबरें और फोटो पेज 8 पर)

अनाथ बच्चों के लिए राहत कोष का फैसला, पुरातन छात्र परिषद भी बनेगी

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ में संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों, समन्वयकों और निदेशकों की एक बैठक का आयोजन किया गया। कुलपति प्रोफेसर एनके तनेजा ने इसकी अध्यक्षता की।

बैठक के दौरान अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये। बैठक में फैसला लिया गया कि अनाथ बच्चों के लिए एक रिलीफ फंड बनेगा। इसमें शिक्षकों द्वारा धन एकत्र किया जाएगा। इस फंड से कैंपस में पढ़ने वाले ऐसे बच्चों की मदद की जाएगी जिनके परिजनों की कोविड-19 के दौरान मृत्यु हो गई और जिनके पास आय का अन्य कोई साधन नहीं है। कुलपति प्रोफेसर नरेंद्र कुमार तनेजा जी ने पहल करते हुए इस फंड में 50 हजार रुपये की सहयोग राशि प्रदान की।

-संकायाध्यक्षों, विभागाध्यक्षों, समन्वयकों और निदेशकों की बैठक में मौजूद कुलपति प्रोफेसर एनके तनेजा।

बैठक में निर्णय लिया गया कि विभाग में एक पुरातन छात्र परिषद का गठन किया जाएगा तथा उसका रजिस्ट्रेशन भी कराया जाएगा। पुरातन छात्र परिषद में छात्रों को भी शामिल किया जाएगा।

एक अन्य फैसले के तहत विश्वविद्यालय के हर विभाग द्वारा एक गांव गोद लिया जाएगा। गोद लिए गांव में लोगों को वैक्सीन लगवाने के लिए जागरूक किया जाएगा।

विभागों द्वारा छात्रों और उनके परिजनों को भी वैक्सीन के लिए जागरूक किया जाएगा। साथ ही उनसे गूगल फार्म के माध्यम से जानकारी एकत्र की जाएगी कि परिवार में कितने सदस्यों ने वैक्सीन लगवा ली है। हर सप्ताह उसकी रिपोर्ट भी बनाई जाएगी।

कुलपति द्वारा सभी विभागाध्यक्षों को निर्देश दिया गया कि एक सप्ताह में अपनी एक्यूआर रिपोर्ट आईक्यूएसी विभाग में जमा करें। विभागाध्यक्षों को ई-मेल के माध्यम से सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिये भी कहा गया।

बैठक में प्रति कुलपति प्रोफेसर वाई विमला, कुलसचिव धीरेंद्र वर्मा, कुलानुशासक प्रोफेसर बीरपाल सिंह, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रोफेसर भूपेंद्र सिंह, प्रो. पवन कुमार शर्मा, प्रो. नवीन चंद्र लोहानी, प्रो. मृदुल कुमार गुप्ता, प्रो. जितेंद्र ढाका, प्रो. वाई सिंह, प्रो. रूप नारायण, प्रो. नीलू जैन, प्रो. स्नेहलता जायसवाल, प्रो. बिंदु शर्मा, प्रो. एसएस गौरव, प्रो शैलेंद्र शर्मा, प्रो विजय मलिक, प्रो. विजय जायसवाल, डॉ. विवेक त्यागी आदि मौजूद रहे।

वित्त समिति की बैठक में भी हुए बड़े फैसले

परिसर संवाददाता

मेरठ। विश्वविद्यालय वित्त समिति की बैठक कुलपति प्रोफेसर नरेंद्र कुमार तनेजा जी की अध्यक्षता में हुई जिसमें कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

- बैठक में विश्वविद्यालय परिसर स्थित स्ववित्त पोषित योजना के अंतर्गत संचालित संस्कृत के सभी पाठ्यक्रमों का शिक्षण शुल्क विश्वविद्यालय परिसर स्थित नियमित पाठ्यक्रमों के समान किए जाने का निर्णय लिया गया।
- बैठक में सांस्कृतिक और कला को बढ़ावा देने के लिए दो लाख रुपये वार्षिक का प्रावधान किया गया।
- महिला अध्ययन केंद्र के लिए विभिन्न गतिविधियों को संचालित करने के वास्ते पांच लाख रुपये का प्रावधान किया गया।
- शैक्षणिक सत्र 2021-22 के लिए टीचिंग असिस्टेंट रखने के लिए 15 लाख रुपये के बजट का प्रावधान किया गया।
- दिव्यांग कल्याण के संबंध में गतिविधियां संचालित करने के लिए पांच लाख रुपये बजट का प्रावधान किया गया।
- चेक की जगह ई-पेमेंट व्यवस्था लागू करने का निर्णय भी लिया गया।

हमारे जीवन का प्रबंधन है संस्कृति

• भाषा स्वयं में एक मुखरित संस्कृति है: मृदुल कीर्ति • 25 वर्षों में मिलेंगी आशातीत सफलतए: वाई. विमला

परिसर संवाददाता

मेरठ। आजादी के अमृत महोत्सव मंथन सेमिनार श्रृंखला के अंतर्गत 'आजादी के 75 वर्ष और आगामी 25 वर्ष' यथार्थ और स्वप्न- संदर्भ सांस्कृतिक पक्ष पर विश्वविद्यालय द्वारा 18 जुलाई को सेमिनार आयोजित किया गया। सेमिनार में मेरठ की मूल निवासी और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिलब्ध, वेद, पुराण, भगवतगीता सहित महत्वपूर्ण ग्रंथों की अनुवादक और वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. मृदुल कीर्ति कार्यक्रम की विशिष्ट वक्ता थीं। आस्ट्रेलिया में रह रहीं डा० मृदुल कीर्ति ने कहा कि भाषा मुखरित संस्कृति है। संस्कृति भाषा और संस्कार की कहानी है। संस्कृति हमारे जीवन का प्रबंधन है। संस्कृति समाज का अदृश्य संविधान है।

उन्होंने कहा कि योग के माध्यम से भारतीय संस्कृति वैश्विक स्तर पर विशिष्ट पहचान रखती है। योग के माध्यम से भारतीय भाषा का प्रसार व्यापक स्तर पर हो रहा है। लगभग सात हजार मंत्रों का काव्यानुवाद कर चुकीं मृदुल कीर्ति ने आगामी वर्षों में सकारात्मक प्रभाव की चर्चा की। डॉ. कीर्ति ने कहा कि प्रकृति और संस्कृति दोनों को बचाये रखने की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि संस्कृति स्वयं नहीं जन्मी है, संस्कृति भाषा से जन्मी है। भाषा स्वयं में ही मुखरित एक संस्कृति है जो संस्कृति के अव्यक्त रूप को व्यक्त करती है और वही आगामी पीढ़ी तक इसे ले जाती है। भाषा में संस्कृति, सभ्यता और संस्कार के बीज समाहित होते हैं। संस्कृति हमारे जीवन का प्रबंधन है। जो सुसंस्कृत करे वह संस्कृति है। संस्कृति के छह लक्षण हैं- धर्म, दर्शन, इतिहास, भाषा, वेशभूषा और कला। इस तरह संस्कृति समाज का अदृश्य संविधान है, जो अंतर को अदृश्य रूप से सचेत रखता है।

उन्होंने कहा कि यथार्थ और स्वप्न के दो कालखंड हैं। हमारी संस्कृति हमें प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर ले जाती है। योग ने विश्व को भारत से व्यापक रूप में जोड़ा। योग के माध्यम से भी हमारी भाषाएं हिंदी और संस्कृत लोगों के बीच पहुंच रही हैं। अब धीरे-धीरे विश्व एक होता जा रहा है। उन्होंने भारत सरकार के माध्यम से दुनिया में पहुंच रहे महत्वपूर्ण साहित्य की भी चर्चा की। उन्होंने बच्चों को संस्कारित करने पर जोर दिया और कहा कि बच्चों के अंतस में आप क्या देते हैं, यह महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि पतंजलि योग सूत्र अनुशासन सिखाता है, जो दुनिया में आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। शारीरिक, मानसिक और आंतरिक अनुशासन की जरूरत है। उन्होंने कहा कि अनुशासित होने पर आप अपने रूप को देख सकते हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रति कुलपति प्रोफेसर वाई. विमला ने कहा कि भारतीय संस्कृति बहुआयामी है। नए समय में संस्कृति में नया कलेवर जुड़ता है। परिवर्तन में पुराना समय किसी न किसी रूप में जुड़ जाता है। आगामी 25 साल में आशातीत सफलताएं मिलने वाली हैं। भारतीय संस्कृति का निरंतर विकास होगा। जो आज का यथार्थ है वह हमें पूरी तरह दिखाई नहीं देता। यह देखने की आवश्यकता है कि हमारी संस्कृति ने विश्व में किस तरह अमिट छाप छोड़ी है। भारतीय संस्कृति के केंद्र में दर्शन है और दर्शन सदैव आशावाद की बात करता है। वसुधैव कुटुंबकम की बात करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति समृद्धशाली है। वैश्विक स्तर पर यह सर्वविदित है। धर्म का उदय मानवता के उदय और विकास के लिए होता है, दूसरों पर कुठाराघात करने के लिए नहीं। हमारी संस्कृति पशु-पक्षी, प्रकृति

अमृत महोत्सव मंथन सेमिनार श्रृंखला के अंतर्गत सांस्कृतिक पक्ष पर सेमिनार

सबको साथ लेकर चलती है।

कार्यक्रम संयोजक और कला संकायाध्यक्ष प्रोफेसर नवीन चंद्र लोहनी ने कार्यक्रम का संचालन किया। उन्होंने कहा कि विश्व में भारतीय संस्कृति और भाषा विशिष्ट महत्व रखते हैं। उन्होंने आजादी के स्वर्णिम 75 वर्षों की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए आगामी 25 वर्षों के आशावान समय पर विचार रखे।

कार्यक्रम सह-संयोजक एवं विभागाध्यक्ष वनस्पति विज्ञान प्रो. रूप नारायण ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति प्रकृति से अपने रिश्ते को व्यक्त करती है। उन्होंने कहा आज भी हमें यह विचार करना चाहिए कि हमारा जीवन सुखी कैसे हो। जीवन का आनंद तो सामने वाले को आनंद देने में है।

कार्यक्रम में प्रो. मृदुल गुप्ता, प्रो. बीरपाल सिंह, प्रो. एस.एस. गौरव. प्र. एके चौबे, प्रो. शिवराज सिंह, प्रो. आराधना, डॉविवेक त्यागी, डा० पूनम भारद्वाज, डॉ अंजू, डॉ. प्रवीण कटारिया और विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक, एवं संबद्ध महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक और छात्र-छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को सही रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया: जे. नंदकुमार

परिसर संवाददाता

अमृत महोत्सव मंथन सेमिनार श्रृंखला के अंतर्गत राजनैतिक पक्ष पर सेमिनार

मेरठ। आजादी का अमृत महोत्सव मंथन सेमिनार श्रृंखला के अंतर्गत 'आजादी के 75 वर्ष और आगामी 25 वर्ष-यथार्थ और स्वप्न, संदर्भ राजनीतिक पक्ष' विषय पर विश्वविद्यालय द्वारा 20 जुलाई को मंथन सेमिनार आयोजित किया गया। सेमिनार में विशिष्ट अतिथि प्रज्ञा प्रवाह के राष्ट्रीय संयोजक जे. नंदकुमार ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को अपना दायित्व समझना होगा और स्वतंत्रता के बाद भारत में अनेक क्षेत्रों में जो उन्नति हुई है और जो वैज्ञानिक समाज बना है, उसके बारे में जानना होगा।

उन्होंने कहा कि हमें आजादी कैसे मिली, इस पर अनेक अध्ययन हुए हैं। जो पूर्व में इतिहास लिखा गया, उसमें स्वतंत्रता संग्राम में शामिल व्यक्तित्व तथा महत्वपूर्ण आंदोलनों को सही तरह से प्रस्तुत नहीं किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के 50 साल तक शिक्षा व्यवस्था और इतिहास रचना को लेकर अनेक विवाद थे। उसमें पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकों का नियोजन ठीक से नहीं हुआ। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि भारतीय इतिहासकारों का दायित्व है कि सही इतिहास लिखें।

उन्होंने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम 1498 से निरंतर चलता रहा किंतु उसको सही रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया। इसमें पिछड़ों, महिलाओं, वनवासियों की भूमिका का उल्लेख भी नहीं किया गया। अब वह इतिहास पुनः लिखा जाना अपेक्षित है। स्वतंत्रता आंदोलन के इन संघर्षों को नई पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करना होगा जिससे वह स्वतंत्रता संग्राम से परिचित हो सकें। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव प्रोफेसर के. रत्नम ने कहा कि समाज का आज प्रत्येक वर्ग अमीर-गरीब, महिला-पुरुष स्व की पुनर्स्थापना में क्रियाशील दिखाई देता है, किंतु मुगल साम्राज्य के पतन के बाद जिस प्रकार का विमर्श राष्ट्र के समक्ष रखा गया है, उसका विशेष रूप से नए सिरे से अध्ययन करने की आवश्यकता है। उन्होंने मथुरा, मेरठ, बामनोली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश की खाप पंचायतों की 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका का जिक्र किया और कहा कि ऐसे व्यक्तियों की लंबी सूची है जिनको इतिहास में शामिल किया जाना आवश्यक है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रति कुलपति प्रोफेसर वाई. विमला ने कहा कि भारतीय इतिहास समृद्ध है और हम अपने स्वर्णिम भविष्य की ओर बढ़ेंगे। उन्होंने कहा कि बच्चों को पाठ्यक्रमों में ऐसी पुस्तकें पढ़ाई जानी चाहिए जिससे उनमें आत्म गौरव आए। ऐसे पाठ्यक्रम प्राथमिक शिक्षा से ही जोड़े जाने चाहिए जिनसे बच्चों में आत्म गौरव और आत्म बोध बढ़े. कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभागाध्यक्ष और कला संकाय अध्यक्ष प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने किया। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में ऐतिहासिक और सामाजिक पक्ष और सेमिनार की उपयोगिता पर चर्चा की और राष्ट्रीय स्तर पर आजादी के अमृत महोत्सव के आयोजन के संबंध में जानकारी दी। कार्यक्रम में अतिथि परिचय देते हुए प्रो. वीरपाल सिंह ने कहा कि जे. नंदकुमार राष्ट्रवादी चिंतक हैं और उनके नेतृत्व में प्रज्ञा प्रवाह के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण का कार्य किया जारहाहै। अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन प्रो. रूप नारायण, कार्यक्रम सह संयोजक एवं आचार्य वनस्पति विज्ञान विभाग ने किया। उन्होंने कहा कि भारतीय इतिहास को फिर से लिखे जाने की आवश्यकता है। उन्होंने प्रतिभागियों एवं उपस्थित सदस्यों को धन्यवाद दिया।

कार्यक्रम में प्रो.ए.के.चौबे, प्रो.ए.वी.कौर, डॉ. अलका तिवारी, प्रो आराधना, डॉ. अंजू, डॉ. प्रवीण कटारिया, डा. जे.एस. भारद्वाज, प्रो. विघ्नेश त्यागी, प्रो. विजय जयसवाल, डॉ० अनिल मलिक, डॉ.अनिल गौतम एवं विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक एवं संबद्ध महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक और छात्र-छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

वैश्विक पटल पर विशेष स्थान है स्वाधीन भारत का:तरूण विजय

परिसर संवाददाता

अमृत महोत्सव मंथन सेमिनार श्रृंखला के अंतर्गत वेबिनार

मेरठ। स्वाधीन भारत वैश्विक पटल पर विशेष स्थान रखता है। स्मारक, सड़कों व संस्थाओं के नामकरण के जरिये महापुरुषों को स्मरण किया जा सकता है। भारतीय इतिहास का गौरव समृद्धशाली है। स्वाधीनता की उपलब्धियां महत्वपूर्ण हैं। स्वाधीन भारत वैश्विक पटल पर भाषा, संस्कृति, शिक्षा के माध्यम से विशिष्ट पहचान रखता है। आगामी समय नव उत्कर्ष का समय है। समता, समानता, समृद्धता में विश्वास के साथ राष्ट्र उन्नतिशील है। नित नई एवं विकासशील योजनाओं के क्रियान्वयन से राष्ट्र, संस्कृति, संविधान और तिरंगा वैश्विक स्तर पर विशिष्ट पहचान रखता है। ये बातें पांचजन्य के पूर्व संपादक, पूर्व सांसद एवं राष्ट्रीय संस्मारक प्राधिकरण, संस्कृति मंत्रालय के अध्यक्ष तरुण विजय ने कहीं। वे विश्वविद्यालय द्वारा अमृत महोत्सव मंथन सेमिनार श्रृंखला के तहत आयोजित वेबिनार में विशिष्ट वक्ता के रूप में बोल रहे थे।

वेबिनार में बी.एच.यू. वाराणसी में मानविकी के संकाय प्रमुख प्रो० कौशल किशोर मिश्र ने कहा कि पराधीनता की स्मृति से स्वाधीनता का अर्थ अधिक समझा जा सकता है। वैश्विक मानवता की संकल्पना को राष्ट्र आगे बढ़ाता है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी से लेकर अन्य कई क्षेत्रों में भारत विशिष्ट उपलब्धियां संजोए हुए है। मेरठ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम को याद करते हुए उन्होंने कहा कि मेरठ क्रांति धरा है। यहाँ के स्वाधीनता संग्राम ने आजादी की अलख जगाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. नरेंद्र कुमार तनेजा ने कहा कि राजनीति संस्कृति का विशिष्ट आयाम है। संस्कृति बहुआयामी धारणा है। सांस्कृतिक श्रेष्ठता के कारण भारत वैश्विक स्तर पर श्रेष्ठ राष्ट्र रहा है। भारतीय लोकतंत्र परिपक्व है जिसका श्रेय परिपक्व भारतीय राजनीति व्यवस्था को जाता है। कला संकायध्यक्ष, हिंदी विभागाध्यक्ष और कार्यक्रम के संयोजक प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने संचालन और विषय प्रवर्तन किया। उन्होंने भारत को समृद्ध लोकतांत्रिक परंपरा संपन्न देश बताया और उन्होंने सभी आमंत्रित अतिथियों का स्वागत किया। अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम सह संयोजक और आचार्य वनस्पति विज्ञान विभाग प्रो. रूप नारायण ने किया।

इस दौरान प्रति कुलपति प्रो. वाई. विमला, प्रो. जायसवाल, डॉ. अलका तिवारी, प्रो. बीरपाल सिंह, प्रो. आलोक कुमार, डॉ. अंजली मित्तल, डॉ. अंजू, डॉ. प्रवीण कटारिया, प्रो. जे.एस. भारद्वाज भी मौजूद रहे।

देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें'

- चित्रकला विभाग में किया गया प्रदर्शनी का भव्य आयोजन
- अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद को उनकी जयंती पर किया गया नमन

-चित्रकला प्रदर्शनी का अवलोकन करते कुलपति प्रोफेसर एन.के. तनेजा और अतिथिगण।

परिसर संवाददाता

मेरठ। देश हमें देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें। अपने लिए तो सब करते हैं, देश के लिए कुछ करें। आज का दिन बहुत ही गौरव का दिन है। चंद्रशेखर आजाद ने स्वयं के लिए नहीं बल्कि देश के लिए अपना शरीर न्यौछावर कर दिया। सबको साथ लेकर चलना उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी। ये बातें आजादी के अमृत महोत्सव की श्रृंखला में आयोजित चित्रकला प्रदर्शनी के दौरान मुख्य अतिथि कार्य परिषद के सदस्य डॉ दर्शनलाल अरोड़ा ने कही।

चित्रकला प्रदर्शनी कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. नरेंद्र कुमार तनेजा ने कहा कि शिक्षकों का बहुत बड़ा कार्य है विद्यार्थियों को संस्कारित करना, उनके जीवन में क्या अच्छे कार्य हो सकते हैं, इसके लिए उनको प्रेरित करना। अपना भरण पोषण, अपने परिवार का भरण पोषण करना, यह हमारी प्रवृत्ति है। इससे बड़ी प्रवृत्ति यह है कि जिसके कारण हमारा सामाजिक राष्ट्रीय व मानवता जीवन बहुत अधिक धनात्मक रूप से प्रभावित होता है। बलिदान और त्याग के कारण ही चंद्रशेखर आजाद को हम स्मरण कर रहे हैं, नमन कर रहे हैं।

भारतीय चिंतन में प्रारंभ से ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और विचार की भिन्नता को प्रमुखता प्रदान की गई है। इतिहास की पुस्तकों में जो पढ़ाया है, उससे कहीं अधिक बड़ी सच्चाई है कि ब्रिटेन के पूर्व प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि सुभाष चंद्र बोस के नेतृत्व में क्रांति धारा जब बही तो उसके कारण ही अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर विवश होना पड़ा। उस समय देश में नरम दल का सोचना था कि देश को आजाद कराने के लिए अहिंसा ही सबसे बड़ा हथियार है, जबकि गरम दल का सोचना था कि जो हमारे देश पर शासन कर रहे हैं, उन्हें परास्त करने के लिए सर्वस्व बलिदान करना ही पड़ेगा। यह देश उन बलिदानियों के प्रति कृतज्ञ है, जिन्होंने राष्ट्र के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। युवाओं को उनके बलिदान से प्रेरणा लेते हुए देश के लिए क्या कर सकते हैं, ऐसा सोचना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर आराधना गुप्ता ने किया। इस दौरान कुलसचिव धीरेंद्र कुमार वर्मा, छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रोफेसर भूपेंद्र सिंह, कुलानुशासक प्रोफेसर वीरपाल सिंह, कार्यवाहक वित्त अधिकारी प्रोफेसर हरे कृष्णा, प्रोफेसर राकेश गुप्ता प्रोफेसर नीलू जान गुप्ता, प्रोफेसर बिंदु शर्मा, प्रोफेसर अजय विजय कौर, प्रोफेसर विग्नेश त्यागी, कार्यक्रम संयोजक डॉ. अलका तिवारी, डॉ. विवेक कुमार त्यागी, डॉ. पूर्णिमा वशिष्ठ, डॉ. प्रदीप चौधरी, डॉ. योगेश मोरल आदि मौजूद रहे।

हमारा रोम-रोम क्रांतिकारियों का ऋणी

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर वाई. विमला ने कहा कि हमारा रोम-रोम क्रांतिकारियों का ऋणी है। उन्हीं के कारण हम आज स्वतंत्र भारत में सांस ले पा रहे हैं। उन्होंने हमारे देश को आजाद कराकर स्वर्ग बना दिया। उनके बलिदान को शत-शत नमन। वे हमारे लिए चिर वंदनीय, चिर स्मरणीय है क्योंकि उनके कार्य महान थे। आज के युग में हम बेशक कह रहे हैं कि हम आगे बढ़ रहे हैं, लेकिन क्रांतिकारियों को याद किए बिना हमारे विकास का कोई अर्थ नहीं है। हमारा अस्तित्व सदा इनका ऋणी रहेगा।

अब कॉलेजों को जंतुओं पर अनुसंधान करना सरल

- जंतुओं पर शोध करने के लिए विश्वविद्यालय मैं खुला विश्व स्तरीय सेंटर
- कुलपति प्रोफेसर नरेंद्र कुमार तनेजा ने किया एनिमल हाउस विस्तार

परिसर संवाददाता

मेरठ। अब कॉलेजों को सरल होगा जंतुओं पर अनुसंधान करना क्योंकि चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में जंतुओं पर शोध करने के लिए अनुसंधान केंद्र यानी एनिमल हाउस का विस्तार हो गया हैं। कॉलेजों के छात्रों को जंतुओं पर अनुसंधान करने के लिए अब बाहर नहीं जाना पड़ेगा। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय परिसर स्थित एनिमल हाउस में वह शोध कर सकेंगे।

शोध करने के लिए के लिए छात्रों को केवल अपना रजिस्ट्रेशन कराना होगा। एनिमल हाउस का विस्तार करते हुए चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर नरेंद्र कुमार तनेजा ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह काम आने वाले समय में बहुत योगदान देगा शोध करने के लिए छात्र एनिमल हाउस में विश्व स्तरीय शोध कर सकेंगे तथा अपना पेपर पब्लिश कर सकेंगे।

जंतु विज्ञान विभाग विभागाध्यक्ष और एनिमल हाउस की संयोजक प्रोफेसर नीलू

जैन गुप्ता ने बताया कि एनिमल हाउस एथिकल कमेटी से संबंध है। साथ ही यह मत्स्य पालन पशुपालन और डेयरी मंत्रालय से संबंध है। छात्रों को यहां पर शोध करने के लिए रजिस्ट्रेशन कराना होगा उसके बाद वह जिस भी जंतु पर अपना शोध करना चाहते हैं वह जंतु लाकर शोध कर सकते हैं। विश्वविद्यालय स्तर पर यह जंतुओं पर शोध करने के लिए पहला प्रयास है जो विश्वविद्यालय से संबंध कॉलेजों में जंतुओं पर शोध करने वाले छात्रों के लिए बहुत ही उपयोगी साबित होगा।

इस दौरान प्रोफेसर संजय भारद्वाज प्रोफेसर एके चौबे प्रोफेसर बिंदु शर्मा रमेश यादव आदि मौजूद रहे।

भारतीय सेना के शौर्य और पराक्रम का प्रतीक है कारगिल विजय दिवस

- कारगिल विजय दिवस के उपलक्ष्य में श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया।
- विश्वविद्यालय और भारतीय प्रज्ञान प्रवाह की ओर से शहीदों को दी गई श्रद्धांजलि।

परिसर संवाददाता

मेरठ। कारगिल की जंग में भारत को मिली सफलता को 22 साल हो गए हैं। भारतीय सेना के शौर्य और पराक्रम का प्रतीक कारगिल विजय दिवस के रूप में हर साल 26 जुलाई को मनाया जाता है। साल 199 में कारगिल युद्ध में देश के वीर-जवानों ने पाकिस्तान को धूल चटा दी थी। कारगिल विजय दिवस के मौके पर देशवासी अपने प्राणों की आहुति देकर भारत माता की रक्षा करने वाले वीर जवानों को याद करते हैं और उन्हें श्रद्धांजलि देते है। कारगिल युद्ध में भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तान के करीब ती हजार सैनिकों को मार गिराया था। यह युद्ध 18 हजार फीट की ऊंचाई पर लड़ा गया था। ये बातें विश्वविद्यालय व भारतीय प्रज्ञान प्रवाह (प्रज्ञा प्रवाह) मेरठ प्रांत द्वारा संयुक्त रूप से विजय दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के कुलानुशासक प्रो. बीरपाल सिंह ने कहीं।

कारगिल विजय दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शहीदों को नमन करके उन्हें श्रद्धांजलि प्रदान की गई।

आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर मनाये जा रहे अमृत महोत्सव की श्रृंखला में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्षता कर रही विश्वविद्यालय की प्रति कुलपति प्रो. वाई. विमला ने कहा कि इस युद्ध के दौरान भारतीय सैनिकों को कई बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तानी सैनिक ऊंची पहाड़ियों पर थे और हमारे वीर-जवानों को रात भर में चढ़ाई कर पहुंचना था। यह युद्ध 60 दिनों तक चला था और आखिर में पाकिस्तान को मुंह के बल गिरना पड़ा था।

उन्होंने कहा कि वीर जवानों के कारण ही आज हम चैन की नींद ले पाते हैं। उनको जितनी बार नमन किया जाए, उतना कम है।

इस दौरान कार्यक्रम की संयोजक प्रो. आराधना गुप्ता, सहसंयोजक डॉ. अलका तिवारी, कुलसचिव धीरेंद्र वर्मा, प्रो. नवीन चंद्र लोहनी, प्रो. जयमाला, प्रो. बिंदु शर्मा, डॉ. जमाल अहमद सिददकी, डॉ. पूर्णिमा वशिष्ठ, डॉ0 शालिनी भी मौजूद रहीं।

तालिबानी चेहरे में पाकिस्तानी आक्रमण

अफगानिस्तान में जिस तीव्रता से तालिबान ने कब्जा किया वह संपूर्ण विश्व के लिए चौंकाने वाला था। कमजोर मनोबल एवं इच्छाशक्ति वाला अफगानिस्तानी नेतृत्व एवं कागजी सेना तालिबान को रोकने में नाकामयाब रहे। परन्तु अफगानी सरकार के सदस्यों ने यह आरोप भी लगाया कि तालिबान के इस कब्जे के केंद्र में पाकिस्तान है। पाकिस्तान ने इन आरोपो को भले ही नकार दिया हो परन्तु एक माह पूर्व ही पाकिस्तान के मंत्री शेख रशीद ने एक समाचार पत्र को बताया था कि तालिबानी लड़ाकों का इलाज वहाँ के अस्पतालो में हो रहा है। उसके बाद तालिबान की विजय के एक दिन बाद ही पाकिस्तान प्रधानमंत्री का बयान कि अफगानिस्तान ने गुलामी की जंजीरों को तोड़ दिया है, पाकिस्तान की खुशी दिखाता है।

मयंक पांडे

1994 में तालिबान को जन्म देने से लेकर अमेरिकी सेना के अफगानिस्तान में आने पर तालिबानी नेताओं को संरक्षण देना का काम पाकिस्तान ने ही किया। पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आई.एस.आई ने ही तालिबान को भी प्रशिक्षित किया। 2001 से भारत की अफगानिस्तान में बढ़ती भागीदारी को दबाने के लिए पाकिस्तान सदैव तालिबान को सहायता देता रहा जो कि एक प्रमुख कारण रहा तालिबान के नष्ट न होने का। उसके बाद जब डोनाल्ड ट्रम्प अफगानिस्तान से अपनी सेना हटाना चाहते थे तब उस चर्चा में मुल्ला अब्दुल गनी बरादर को शमिल करने के लिए 2018 में उसे रिहा करना पाक की रणनीति रहा। इस चर्चा में पाकिस्तान ने इस बात का भी ध्यान रखा कि इस चर्चा के केंद्र में तालिबान रहे और अफगानी सरकार को दरकिनार कर दिया जाये। फिर जब जून माह से अमेरिकी सेना अफगानिस्तान से जाने लगी तब तालिबान को आर्थिक और स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध करायी ताकि वह जल्द ही अफगानिस्तान पर कब्जा कर सके। उसके बाद पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में चीन को तालिबान के साथ लाकर खड़ा कर दिया है जिसकी नजर अफगानिस्तान के खनिज भंडार पर है। इस गठबंधन से भारत के लिए खतरा बढ चुका है। अभी 23 अगस्त को पाक अधिकृत कश्मीर से आयी खबरों से यह बिल्कुल स्पष्ट हो चुका है कि अब पाकिस्तान के तालिबानी लड़ाके भारत में मुजाहिदीन एवं लश्कर की तरह कश्मीर में घुसपैठ के लिए तैयार हैं। अफगानिस्तान में भारत का 21000 करोड़ रूपये से अधिक का निवेश है। वह भी अब खतरे में है। भारत सरकार इस दौर में सिर्फ इन्तजार ही कर सकती है। अगर तालिबान अंतरराष्ट्रीय कानूनों का पालन कर भी लेता है तब भी तालिबान को मान्यता देना भारत के लिए बुरे और अधिक बुरे को चुनने जैसा है।

अंतरराष्ट्रीय समुदाय अपने हितों के लिए हर बार की तरह बंटा हुआ है। जहां रूस, चीन, पाक और ईरान ने अफगानिस्तान में अपने दूतावास बंद नही किये, वहीं जर्मनी और फ्रांस जैसे देशों ने अफगानिस्तान को दिये जाने वाली विकास सहायता पर तत्कालीन रोक लगा दी जो कि 4800 करोड़ अफगानी मुद्रा के बराबर है। भारत सरकार के लिए यह एक अत्यन्त संवेदनशील एवं मुश्किल कूटनीतिक चुनौती है। भारत सरकार को जहां इन्तजार करना होगा पाकिस्तान के दबदबे के कम होने का, वहीं वह इतना वक्त नहीं ले सकता कि वह इस महत्वपूर्ण क्षेत्र पर अपना दबदबा खो दे क्योंकि अफगानिस्तान भारत का मध्य एशिया का दरवाजा है।

'आतंकवाद' एक विनाश लीला

'न जाने क्या सोचा था, जिसने किया आतंकवाद का आविष्कार, घोड़े को दबाते ही मार दिया जाता कोई, आसान कितना हो गया है मौत का व्यापार'

आज हम हर ओर हो रहे आतंकवाद से त्रस्त हैं। यह आतंकवाद आखिर है क्या, कहां से आया है जिसने चारों दिशाओं में हाहाकार मचा दिया है। देखा जाए तो आतंकवाद एक ऐसी विचारधारा है, जो राजनीतिक लक्ष्य प्राप्ति के लिए अस्त्र शस्त्र के प्रयोग में विश्वास रखती है। शक्ति का ऐसा घृणित प्रयोग प्रायः विरोधी वर्ग, दल, समुदाय, या सम्प्रदाय को भयभीत करने और उस पर विजय प्राप्त करने की दृष्टि से किया जाता है। राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए आतंकवादी गैरकानूनी ढंग से अथवा हिंसा से सरकार को गिराने तथा शासनतंत्र पर प्रभुत्व करने का प्रयास करते है।

अनुष्का चौधरी

गांधी जी ने ठीक ही कहा है कि - 'अपने लक्ष्य को प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य और अधिकार है, लेकिन इसके लिए साधनों की पवित्रता भी परमावश्यक है। हम हिंसा को किसी भी रूप में पवित्र साधन के रूप में नहीं अपना सकते है।' परंतु इन आतंकवादियों को इन विचारों से क्या लेना देना वे तो स्वार्थपूर्ति हेतु मानवता हनन की प्रत्येक हद को तोड़कर निम्न स्तर तक जा पहुंचे है।

विगत तीन दशकों से हमारा देश आतंकवाद की आग में झुलस रहा है जिसे पंजाब, बंगाल और जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों ने व्यापक स्तर तक पहुंचाया। आतंकवाद पूरे विश्व की समस्या बन चुकी है। और तो और भौतिक साधनों से संपन्न राष्ट्रों में आतंकवाद की प्रवृत्ति पनप रही है। जो लोग इस प्रवृत्ति को हवा देने में लगे है वे खुद इसी आग में झुलस रहे है। लगता है मानों-

'हर बूंद खून की हमसे कर रही पुकार, नफरत भरी दुनिया में अब नही प्यार।'

आतंकवाद का कोई लक्ष्य नही होता, न ही इसका क्षेत्र ही सीमित होता है। किंतु इतना तो स्पष्ट है कि इसने हम सबके जीवन को असुरक्षित तो बना दिया है। आतंकवाद मानवता के लिए कलंक है इसलिए इसका कठोरता से दमन किया जाना चाहिए।

इसके लिए हमारे देश की सरकार को तुष्टिकरण की राजनीति को छोड़कर भविष्य में ठोस व कठोर कदम उठाने होंगे ताकि इस समस्या का समूल नाश हो और देश सशक्त हो। तभी जनता का भी सरकार के त्रति विश्वास दृढ होगा। इस दिशा में हमें अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सभी राष्ट्रों को एक मंच पर लाकर और एकजुट होकर प्रयास करने होंगे ताकि कोई भी आतंकवादी गुट किसी दूसरे देश में प्रशिक्षण या सहयोग न ले सके। ऐसा करने से वह गुट अलग-थलग पड़ जायेगा।

आतंकवाद एक राष्ट्रीय समस्या है, हम सबको इसको जड़ से उखाड़ फेंकना है, इन पंक्तियों क साथ मैं अपने शब्दों को विराम देती हूँ-

अतंक के हर पहलू का करना है बहिष्कार, सिर्फ अमन और चैन का हो प्रसार, पूरा देश हो एक परिवार, हर शख्स को मिलता रहे बस प्यार, प्यार, प्यार।

कामाख्या माता दर्शन और गुहावटी भ्रमाण

नरेश सोलंकी

दो दिन, दो रात के लंबे सफर के बाद जब हम गुवाहाटी रेलवे स्टेशन पर उतरे, मैं और मेरा दोस्त भव्य, अभी भी ऐसा ही महसूस हो रहा था कि हम ट्रेन में ही बैठे हैं। स्टेशन को देखा तो हमें भरोसा नहीं हो रहा था कि हम भारत के ही किसी रेलवे स्टेशन पर खड़े हैं। दूर से देखने में तो वह किसी होटल सा प्रतीत होता है। उसके बाद हमने उस दोस्त को फोन किया जिसके आमंत्रण पर घर से दो हजार किलोमीटर चले आये थे। उसने अपने कॉलेज हॉस्टल का पता भेजा। गूगल मैप से कुछ क्लियर नहीं हो पा रहा था। पुरानी कहावत है की जेब में दाम और मुंह में जुबान तो कहीं भी पहुंचा जा सकता है। आधुनिकता के चोला को उतारकर हमने उसी को अपनाया और रास्ता पूछना शुरू किया। यहां नुक्कड़ और ठेला वाले लोग हिंदी भाषा नहीं जानते थे। हमने नौवीं क्लास में असम में रहते हुए असमिया भाषा सीखी थी पर यह ऊंट के मुंह में जीरा जैसा था। यह यहां के लोगों से बात करने के लिए पर्याप्त नहीं थी फिर भी हमने टूटी फटी भाषा से इन लोगों से उस स्थान के बारे में पूछा और धक्के खाते हुए आखिरकार पहुंच ही गए असम इंजीनियरिंग कॉलेज गुवाहाटी में।

वहां हमें दोस्त का दोस्त अभिषेक मिला। उसने हमारा जोरदार स्वागत किया और हमें रूम में लेकर गया। अभिषेक मेरे दोस्त ईशान का रूममेट भी था। उनका हास्टल बहुत ही सुंदर और हरा भरा था। पहाड़ के किनारे जो था। दोपहर 1:00 बजे क्लास करने के बाद ईशान आया। मैंने ईशान को लगभग 6 साल बाद देखा था। वह मुझे देखते ही मेरे से लिपट गया। ऐसा लगा प्रेमी तो बेवजह बदनाम है, असली प्यार तो दोस्ती में है। सब ने साथ में लंच किया। लंच में दाल चावल और चिकन था। मैस में सिर्फ़ भात (चावल) ही मिलता है। वहां रोटियां नहीं मिलती है।

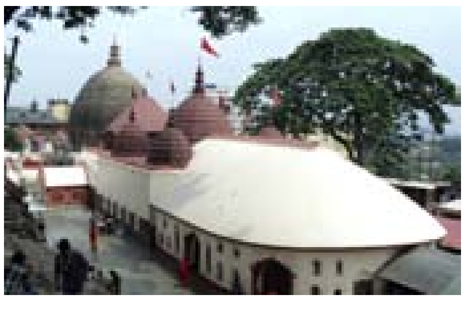

दो बजे हमने ओला कैब बुक की और कामाख्या माता के दर्शन के लिए निकल पड़े। मन्दिर पहाड़ के काफी ऊपर था। मंदिर तक पहुंचने का रास्ता बहुत ही सुन्दर था। पहाड़ में से कटी हुई सड़कें, पहाड़ पर उगी हुई घास और पेड़। दृश्य काफी मन मोहक था। हम ऊपर पहुंचे जहां पर मंदिर था। ईशान ने हमको बताया यहां दुकानों से अगर हम प्रसाद लेते हैं, तो यह हमारे जूते सुरक्षित रखते हैं। दूसरे मंदिरों की तरह यहां पर भी बहुत भिखारी थे। मुझे टूर पर जाते वक्त दो चीज बहुत असहज लगती हैं, पहली ट्रेन में किन्नर दूसरी मंदिर में भिखारी। मंदिर बंद होने वाला था। यहां दो लाइन लगी हुई थी एक लाइन बहुत लंबी थी दूसरी लाइन बहुत छोटी थी। पता चला छोटी लाइन पांच सौ रुपए देने वालो की थी। माता रानी के दर्शन तो अब नहीं हो सकते थे क्योंकि लाइन बहुत लंबी थी और हम बहुत लेट हो चुके थे। मंदिर के आसपास घूमने लगे तो देखा कि वहां बहुत सारे बकरे और कबूतर थे। अभिषेक ने बताया कि यहां बकरा, कटरा और कबूतर की बलि दी जाती है।

पहाड़ के ऊपर एक छोटा सा तालाब था। इसमें सिर्फ़ बारिश का पानी इक्कठा होता है। तालाब का भी अनोखा इतिहास है कि आज तक ये सूखा नहीं है। कुछ लोगों की मान्यता है कि ये पाताल तक गहरा है। इस में मछलिया भी थीं छोटी-छोटी बहुत सुंदर। पूजा के बर्तन इसी में धुले जाते हैं और पुजारी भी यहां ही स्नान करते हैं इसके बाद हम पहाड़ की सबसे ऊंची चोटी की ओर चलने लगे। हमारे पसीने छूट गए। वहां पहुंचने के बाद पता चला कि ये पहाड़ी लोग इतने फिट कैसे रहते हैं। वहां भी एक मंदिर था। वाह क्या सुन्दर नजारा था। एक तरफ बहती हुई ब्रह्मपुत्र दूसरी तरफ उसके किनारे बसा हुआ गुवाहटी। यहां से पूरा शहर नजर आ रहा था। फ़ोटो सेसन हुआ सेल्फी हुईं। फिर हम पहाड़ से नीचे उतरे। ईशान ने कहा कि यहां के मार्केट में बहुत अच्छी चीज मिलती हैं। हम मार्केट पहुंच गए। मार्केट में जाकर देखा तो हमने वहां पर कपड़ों की सेल चल रही थी। ओहो इनकी अच्छी चीज का मतलब तो हम समझ चुके थे। पर यह जनाब शायद यह भूल गए थे कि हम दिल्ली से हैं और राजीव चौक मेट्रो स्टेशन पर लगातार जाना आना होता रहता है। पर ये क्या जाने राजीव चौक के बारे में। ईशान ने रमाश्री से मिलवाया जो हमारी ही क्लास में ही पढ़ती थी। अब वो कॉटन यूनिवर्सिटी से स्नातक कर रही थी। फिर हम असम इंजीनियरिंग कॉलेज की बस में बैठ कर हॉस्टल आये। यह बस फ्री सेवा थी। यह सिर्फ कॉलेज के विद्यार्थियों के लिए ही थी।

अगले दिन ईशान और अभिषेक कॉलेज चले गए। मैं और भव्य अधूरे मिशन को पूरा करने के लिए चले यानी माता रानी के दर्शन के लिए। हम आज प्रातः नौ बजे ही पहुंच गए थे और लाइन में लग गए। नौ बजे हम लाइन में लगे थे और माता रानी के दर्शन तीन बजे हो पाये। पर पता ही नहीं चला कि यह वक्त कब निकल गया। अलग-अलग प्रदेशों से लोग आए हुए थे। राजनीति पर चर्चा हो रही थी। राजनीति की चर्चा और हम दूर रहें ऐसा हो नहीं सकता तो हमने भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। हमने बकरों की बलि देते हुए देखा। जब से हम लाइन में लगे थे तब से लेकर जब तक हमने माता रानी के दर्शन किए थे लगभग सौ से भी ज्यादा बकरों की बलि दी जा चुकी थी। फिर माता रानी के दर्शन किए और वहां पर चलने वाले भंडारे से खाना भी खाया। यहां भंडारे में खिचड़ी और खीर थी। इसके बाद हम लौट गए।

अगले दिन हम स्टीमर में दुनिया के सबसे छोटे नदी आईलैंड को देखने निकल पड़े। वहां भगवान शिव का मंदिर था। जिसका नाम उमानंद धाम था। इसे पीकॉक आईलैंड भी कहा जाता है। ये उमान्नद घाट से 10 मिनट की दूरी पर था। ये ब्रह्मपुत्र नदी में स्थित है। जो लोग यह कहते हैं कि इंडिया में घूमने के लिए क्या है उनके लिए बेहतर ऑप्शन हो सकता है।

इस यात्रा के बाद एक बात अच्छे से समझ में आ गई थी कि जिन लोगों को जंगली कहते हैं, वास्तव में वे जंगली नहीं हैं। जंगली तो हम लोग हैं जहां आए दिन अखबारों में लूट, बलात्कार, चोरी, डकैती हत्या आदि की खबर आती रहती है। वहां भ्रूण हत्या नहीं होती। वहां लड़के लड़कियों को समान समझा जाता है। वहां पर दहेज प्रथा नहीं है। वहां ईमानदारी है। हम जानते हैं कि भारत में उजाला सबसे पहले नॉर्थ ईस्ट में आता है। भारत का सूरज भी उत्तर पूर्व से निकलता है।

संरक्षक: प्रोफेसर एनके तनेजा (कुलपति), **मुख्य संपादक:** डॉ. प्रशांत कुमार, **संपादक:** डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, **संपादकीय सलाहकार-** दीपिका वर्मा, लव कुमार सिंह, मितेंद्र गुप्ता, पेज सज्जा और **संपादकीय टीम:** मुस्कान कटारिया (बीजेएमसी पंचम सेमेस्टर), मयंक पांडे, अनुष्का चौधरी (बीजेएमसी तृतीय सेमेस्टर)

पुण्यतिथि पर बाबू जगजीवन राम का स्मरण

विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में हुआ विशेष व्याख्यान का आयोजन

परिसर संवाददाता

मेरठ। भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के द्वारा स्थापित बाबू जगजीवन राम शोधपीठ की ओर से राजनीति विज्ञान विभाग में छह जुलाई को बाबू जगजीवन राम को पुण्यतिथि पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन हुआ।

आयोजन के मुख्य वक्ता डॉ० राजेन्द्र कुमार पांडेय ने बाबू जगजीवन राम के जीवन का चित्रण किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार बाबू जगजीवन राम ने संघर्ष करते हुऐ देश की राजनीति और विकास में योगदान दिया। बाबू जगजीवन राम लगभग 50 वर्ष तक सक्रिय राजनीति में रहे और भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों की जिम्मेदारी निभाई।

डॉ० पांडेय ने बताया कि जिस भी मंत्रालय में बाबू जी रहे, उसको उच्चतम स्तर तक ले गये। कृषि मंत्री रहते हुऐ हरित क्रांति एवं रक्षा मंत्री रहते 1971 की पाकिस्तान पर विजय उनकी विशेष उपलब्धियों में गिनी जाती हैं। लगभग पांच दशक का उनका राजनीतिक जीवन रहा और देश के उप प्रधानमन्त्री पद की जिम्मेदारी भी निभाई।

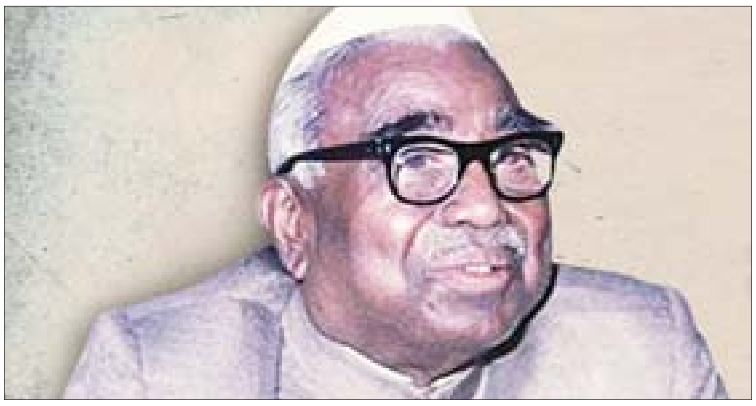

- पूर्व उप प्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम (फाइल फोटो)

राजनीति विज्ञान विभाग के अध्यक्ष और बाबू जगजीवन राम शोधपीठ के निदेशक प्रोफेसर पवन कुमार शर्मा ने अध्यक्षीय भाषण दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ० देवेन्द्र कुमार ने किया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ० जयवीर राणा ने दिया। कार्यक्रम में डॉ सुषमा रामपाल, गगन सिकरवार, भानु प्रताप सिंह, डॉ० संतोष कुमार त्यागी, डॉ० भूपेंद्र प्रताप सिंह आदि उपस्थित रहे।

'बढ़ती आबादी के कारण मानव स्वास्थ्य खतरे में'

-जनसंख्या दिवस पर महिला अध्ययन केंद्र ने कार्यक्रम आयोजित किया।

- बढ़ती जनसंख्या के कारण मुख्य रूप से अशिक्षा व अंधविश्वास बताये गए।

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय महिला अध्ययन केंद्र द्वारा विश्व जनसंख्या दिवस के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता डॉ इंदु सिंहवाल ने कहा कि बढ़ती जनसंख्या के कारण गरीबी, भुखमरी जैसी समस्याएं पैदा होती हैं और घनी आबादी के कारण मानव स्वास्थ्य को भी खतरा उत्पन्न होता है।

उन्होंने कहा कि दिन पर दिन बढ़ती जनसंख्या के कारण वायुजनित रोग यानी हवा से होने वाली बीमारियां फैल रही हैं। महिला अध्ययन केंद्र की प्रमुख प्रोफेसर बिंदु शर्मा ने कहा कि भारत में बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण अशिक्षा और अंधविश्वास हैं। जनसंख्या को नियंत्रित करने के लिए परिवार नियोजन की आवश्यकता है।

इस दौरान महिलाओं को पोषण आहार वितरित किया गया और परिवार नियोजन के प्रति महिलाओं को जागरूक भी किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे गणित विभाग की विभागाध्यक्ष प्रोफेसर जयमाला ने कहा कि बढ़ती जनसंख्या के कारण अनेक समस्याएं पैदा होती हैं, इसलिए जनसंख्या को नियंत्रण करना बहुत जरूरी है।

दूसरी ओर महिला अध्ययन और एनसीसी की ओर से लल्लापुर में ग्रामीण महिलाओं के साथ एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता मनोसामाजिक विज्ञान कार्यकर्ता डॉ विनीता शर्मा ने कहा कि किशोरावस्था के दौरान शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल करना अत्यंत आवश्यक है। यदि हम स्वस्थ रहेंगे तो परिवार और समाज भी स्वस्थ रहेगा और उसका विकास भी हो पाएगा। इस दौरान महिलाओं को किशोरावस्था में प्रजनन, यौन स्वास्थ्य, पोषण, एनीमिया, पौष्टिक भोजन आदि के बारे में भी जागरूक किया गया।

कार्यक्रम के दौरान डॉ. सुषमा रामपाल ने बताया कि मानव विकास के दृष्टिकोण से महिला स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करना बहुत अनिवार्य है। महिला अध्ययन केंद्र की समन्वयक वह मुख्य आयोजक प्रोफेसर बिंदु शर्मा ने कहा कि महिलाओं के बीच स्वास्थ्य प्रतिस्पर्धा होना बहुत आवश्यक है। कुपोषण व स्वास्थ्य सुरक्षा के अभाव में महिलाओं का विकास अवरुद्ध हो जाता है। इस दौरान डॉ. अनिल यादव आदि मौजूद रहे।

जापान में रिसर्च करेंगी आरती

परिसर संवाददाता

आरती

मेरठ। विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग की एमफिल की छात्रा आरती का जापान की प्रतिष्ठित स्कॉलरशिप मेक्स्ट (MEXT) में चयन हुआ हैं। मेकष्ट (जापान का शिक्षा, संस्कृति, खेल, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय) तीन साल के लिए विज्ञान ओर इंजीनियरिंग के स्नात्क स्कूल, सयातामा विश्वविद्यालय में डॉक्टरेट पाठ्यक्रम के लिए तीन साल की पूर्णकालिक स्कॉलरशिप प्रदान करता है। मेक्स्ट (MEXT) विश्व में प्रतिष्ठित छात्रवृत्ति में से एक है, जिसमें स्कॉलरशिप के अंतर्गत ट्यूशन फीस, परीक्षा फीस, एंट्रेस फीस और आने-जाने का खर्च जापान सरकार द्वारा वहन किया जाता हैं। मेक्स्ट (MEXT) स्कॉलरशिप स्वीकृति दर केवल 0.5 प्रतिशत के साथ सबसे कठिन और प्रतिष्ठित स्कॉलरशिप में से एक हैं। जापान सरकार द्वारा छात्रा को प्रतिमाह एक लाख रुपये से ज्यादा की राशि तीन वर्ष तक प्रदान की जायेगी।

आरती का चयन जापान की सायतामा यूनिवर्सिटी के ग्रेजुएट स्कूल ऑफ साइंस एंड इंजीनियरिंग विभाग के तहत संचालित 'डेवलपमेंट ऑफ ग्रीन एंड सस्टेनेबल केमिकल्स प्रोग्राम' में तीन वर्ष के लिए पीएचडी में हुआ हैं। शोध के दौरान छात्रा का मुख्य फोकस आप्टिकल माइक्रोस्कोपी की सहायता से वायु प्रदूषण के कारण रासायनिक कणों का पेड़-पौधो की वृद्धि एवं व्यवहार का अध्यन रहेगा। मुजपफरनगर के गांव जीवना की निवासी आरती ने कड़ी मेहनत व लगन के साथ स्नातक की पढ़ाई दिल्ली विश्वविद्यालय से तथा स्नातकोत्तर व एमफिल, भौतिकी विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से की है। आरती वर्ष 2020 में एम.फिल. में गोल्ड मेडिलिस्ट भी रह चुकी हैं। आरती ने सितंबर 2020 में भौतिकी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीरपाल सिंह के निर्देशन में स्कॉलरशिप के लिए आवेदन किया था। छात्रा को कुलपति प्रो0 नरेंद्र कुमार तनेजा एवं प्रतिकुलति प्रो. वाई. विमला ने शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

गांव में चलाया टीकाकरण जागरूकता अभियान

परिसर संवाददाता

मेरठ। विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग ने गांव कुंडा में कोरोना टीकाकरण जागरूकता अभियान चलाया। अभियान विभागाध्यक्ष प्रोफेसर वाई विमला के निर्देशन में विभाग के छात्रों एवं शिक्षकों द्वारा आयोजित किया गया। विभागीय टीम ने लोगों को समझाया कि कोरोना का टीका पूरी तरह से सुरक्षित है। टीकाकरण कराने से किसी को कोई भी खतरा नहीं होता है। शिक्षक डॉ. लक्ष्मण नागर ने ग्रामीणों को बताया कि 18 वर्ष पूर्ण कर चुके सभी नागरिकों को टीकाकरण कितना आवश्यक है। गांव की महिलाओं ने कार्यक्रम में उत्साह से भाग से लिया। ग्राम के पार्षद गजेंद्र सिंह, प्रदीप कसाना, जय वीर चपराना और डॉ विकास कुमार ने विभागीय टीम सहयोग किया। विभागीय टीम में डॉ. दिनेश पवार, डॉ. प्रीति, सीनू, नेहा, यति, शिप्रा, चंकी व आयुषी मौजूद रहे।

विधिक साक्षरता और जागरूकता शिविर

परिसर संवाददाता

मेरठ। विधि अध्ययन संस्थान स्थित विधिक सहायता केंद्र सभी ग्रामीणों व अन्य की विधिक सहायता के लिये और सभी सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु मदद करने के लिये कृत संकल्प है और लोगों को चाहिये कि किसी भी कार्यदिवस में केंद्र से संपर्क करके लाभ उठा सकते हैं।

आज के समय में सरकार द्वारा अनेक योजनाएं और महिलाओं की मदद के लिए अनेक कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं, जिससे महिलाओं का संरक्षण हो सके।

ये बातें विधि अध्ययन संस्थान के समन्वयक डॉ. विवेक कुमार ने ग्राम भटीपुरा में आयोजित विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर कार्यक्रम के दौरान कहीं। शिविर का आयोजन विधिक सेवा केंद्र, विधि अध्ययन संस्थान एवं महिला अध्ययन केंद्र, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय ने संयुक्त रूप से अंतराष्ट्रीय न्याय दिवस के अवसर पर आयोजित किया।

कार्यक्रम का उद्घाटन डा0 विवेक कुमार और ग्राम प्रधान श्रीमती मंजू द्वारा किया गया। इस अवसर पर मास्क का वितरण भी किया गया।

विधि अध्ययन संस्थान की ओर से नेहा रूहेला ने ग्रामीण क्षेत्रों में राज्य स्तर की योजनाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने राज्य संचालित सुमंगला योजना, मुफ्त सिलाई योजना, वृद्धा पेंशन योजना आदि के बारे में बताया।

मानवी अग्रवाल ने महिलाओं से संबंधित संवैधानिक और विधिक अधिकार के बारे में जानकारी दी। श्रीमती अपेक्षा चौधरी, सहायक आचार्य ने राज्य स्तर पर संचालित योजनाओं एवं अन्य जागरूकता अभियानों के बारे में, विधवा पेंशन योजना, वृद्ध पेंशन योजना, उत्तर प्रदेश विवाह अनुदान योजना, दिव्यांगजन शादी अनुदान योजना आदि के बारे में बताया।

डा. कुसुमा वती, सहायक आचार्य ने भारत सरकार द्वारा संचालित योजनाओं विशेषकर महिला-ई-हाट योजना, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना तथा वन स्टेप सेंटर तथा अन्य योजनाओं की जानकारी दी।

श्रीमती सुदेशना, सहायक आचार्य ने महिलाओं से जुड़े अपराधों व अपराधों से संरक्षण के लिये विभिन्न कानूनों की जानकारी दी। आशीष कौशिक, सहायक आचार्य ने महिलाओं को अपने अधिकारों के बारे में ज्यादा से ज्यादा जागरूक रहने के लिये कहा। ग्राम प्रधान मंजू ने भविष्य में ऐसे आयोजनों को और बड़े स्तर पर कराने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम का संचालन नोडल अधिकारी डा0 विकास कुमार ने किया।

गांव की 100 से अधिक महिलाओं ने कार्यक्रम में उत्साह से भाग से लिया। कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारी अपूर्व मित्तल, अंकुर चौधरी, अधिवक्ता, दिल्ली उच्च न्यायालय, कुवंर पाल सिंह, शिवानी चौधरी, अमृतांश, पंकज आदि मौजूद रहे।

ग्रामीण महिलाओं को पोषण युक्त आहार का महत्व बताया

परिसर संवाददाता मेरठ। महिला अध्ययन केंद्र, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की ओर से 21 जुलाई को एक जागरूकता शिविर का आयोजन ग्राम नानपुर ग्राम में किया गया। कार्यक्रम में महिला अध्ययन केंद्र की समन्वयक प्रोफेसर बिंदु शर्मा ने जीवन में पोषण युक्त आहार के महत्व के बारे में ग्रामीण महिलाओं और बालिकाओं को बताया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ और सक्रिय जीवन के लिए मनुष्य को उचित एवं पर्याप्त पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। खराब पोषण से रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। गर्भवती और स्तनपान कराने वाली महिलाओं को ऑस्टियोपोरोसिस को रोकने के लिए कैल्शियम युक्त पदार्थ लेने की सलाह दी। कार्यक्रम का संचालन नानपुर कॉलेज में वाणिज्य विभाग के विभागाध्यक्ष शैंकी त्यागी ने किया। इस अवसर पर प्रधानाचार्य डॉ गंगा दास, डॉ मोनिका शर्मा, डॉक्टर पवन तोमर आदि भी मौजूद रहे।

पत्रकारिता का देवता आम आदमी है: राहुल देव

आजादी का अमृत महोत्सव मंथन सेमिनार श्रृंखला के तहत पत्रकारिता पर सेमिनार का आयोजन

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित आजादी का अमृत महोत्सव मंथन सेमिनार श्रृंखला के अंतर्गत दो अगस्त को पत्रकारिता विषय पर मंथन सेमिनार आयोजित किया गया।

विशिष्ट वक्ता और वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव ने कहा कि पत्रकारिता के स्वरूप को तीन रूपों में समझा जा सकता है। एक- आजादी के आंदोलन का दौर, जब भारतीय पत्रकारिता स्वाधीनता आंदोलन के समय एकता, अखंडता, आर्थिक, सामाजिक, औद्योगिक आदि के विकास के संबंध में सकारात्मक भूमिका का निर्वाह करती है। दो- उसके बाद के दो दशक और तीसरे दशक तक राजनीति सत्ता शासन में बदल गई। आजादी के बाद की पत्रकारिता विभिन्न क्षेत्रीय राजनीतिक संगठनों के प्रभाव के कारण स्वार्थ और निजी हितों की राजनीति का शिकार हुई। तीन- उदारीकरण के बाद आर्थिक खुलेपन के इस दौर में पत्रकारिता व्यवसाय बन गई।

उन्होंने कहा कि आज पत्रकारिता एक फैशन है। पत्रकारिता में ऑनलाइन चैनलों की बढ़ती भीड़ ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के मीडिया के प्रभाव को कम किया है। पत्रकारिता के अपने सपने होते हैं, अपने आदर्श होते हैं, मूल्य होते हैं। देश की आंतरिक एवं बाहरी चुनौतियों पर कड़ी निगरानी रखते हुए उन्हें ईमानदारी से पाठकों के सामने लाने का

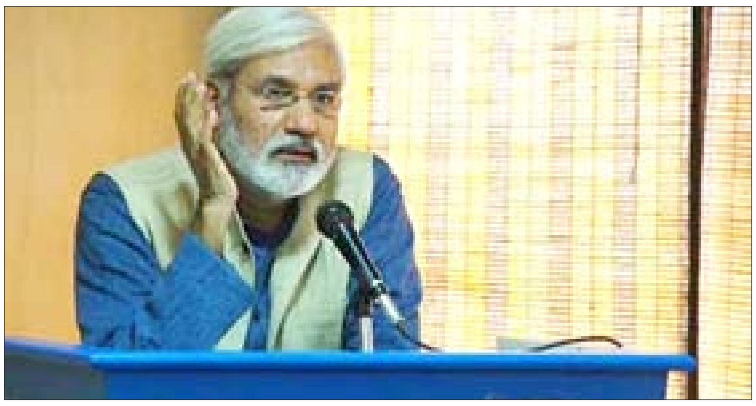

-वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव।

कर्तव्य पत्रकारिता में निहित है।

उन्होंने कहा कि पत्रकारिता और सरकार का मैत्री भाव नहीं है। पत्रकारिता अपना देवता आम नागरिक को मानती है। आपातकाल का समय भारतीय पत्रकारिता के लिए सकारात्मक संकेत का समय नहीं था। तब पत्रकारिता और प्रेस की आजादी का गला घोट आ गय। 1977 के बाद की पत्रकारिता आलोचनात्मक दृष्टि वाली पत्रकारिता के साथ आगे बढ़ती है। इस बीच बहुत सारे तकनीकी बदलाव हुए। अखबारों का बहुत तेजी से विस्तार हुआ। एक नया शिक्षित मध्यमवर्ग अखबार के पाठक के रूप में विकसित हुआ। आपातकाल के बाद का समय कई विविधताओं के दौर का समय था, जहां मीडिया के चरित्र, स्वरूप में बहुत तेजी के साथ परिवर्तन हुए। उन्होंने कहा कि वैश्विक पटल पर भारतीय पत्रकारिता को आगामी 25 वर्षों में विशेष महत्व के साथ देखा जा सकता है। पश्चिम की गलत दृष्टि का शिकार भारतीय पत्रकारिता हुई है। उस दृष्टि को सही रूप से मूल्यांकन कर भारतीय पत्रकारिता को वैश्विक पहचान दिलाने के प्रयास होने चाहिए।

विशिष्ट वक्ता, आर्गनाइजर समाचार पत्र के संपादक प्रफुल्ल केतकर ने कहा कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन वैचारिक आंदोलन था, जिसमें स्वराज, स्वधर्म, स्वदेशी का विवेचन था। प्रारंभिक दौर की पत्रकारिता मिशनरी पत्रकारिता थी। आपातकाल के समय से पत्रकारिता में एक बड़ा परिवर्तन आया। 77 के बाद पत्रकारिता सरकार की निर्भरता पर केंद्रित होने लगी।

सरकार के विरुद्ध और सरकार के पक्ष के रूप में पत्रकारिता दो घड़ों में बंट गई। 1995 के बाद ब्रेकिंग न्यूज़ ने उसके स्वरूप में परिवर्तन किया। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव कम होने लगा और न्यूज चैनलों पर प्रसारित होने वाली डिबेट दर्शकों को कम प्रभावित करने लगी। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में सनसनीखेज खबरों का बोलबाला होने से इसके प्रभाव में कुछ कटौती हुई है।

उन्होंने कहा कि भारतीय पत्रकारिता की दृष्टि विविधता लिए हुए हैं। आगामी 25 वर्षों में पत्रकारिता व्यापक स्तर पर अपनी बड़ी भूमिका के साथ वैश्विक पटल पर स्थापित होगी, जिसे पोस्ट कोविड पत्रकारिता कहा जाएगा, जहां छोटी सी पोस्ट पर बड़ी कवरेज दिखाई जाएगी। पत्रकारिता की दृष्टि, भारतीय दृष्टि के साथ आगे बढ़े, जहां सभी घटनाओं और सरकारी नीतियों पर पत्रकारिता सवाल खड़ा करे। पत्रकारिता को सरकार पर निर्भर न रहते हुए समाज निर्भर होने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रतिकुलपति प्रो. वाई. विमला जी की। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने सभी वक्ताओं का आभार व्यक्त किया और पत्रकारिता की चुनौतियों और संभावनाओं पर गंभीर विश्लेषण किया। अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन प्रो. रूप नारायण ने किया।

इस दौरान प्रो.अशोक चौबे. डॉ. मनोज श्रीवास्तवए, डॉ. सुधा रानी सिंह, डॉ.अंजली मित्तल, डॉ. अंजु, डॉ. विद्या सागर सिंह, डॉ.यज्ञेश कुमार, डॉ. साकेत सहाय, डॉ. कविता त्यागी, डॉ.प्रवीण कटारिया, डॉ. जे.एस. भारद्वाज और विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक एवं संबद्ध महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक और छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

गुणवत्तापूर्ण रिसर्च और रिसर्च फंड मैनेजमेंट की बारीकियां समझाई

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के गणित विभाग की ओर से नई शिक्षा नीति 2020 के एक वर्ष पूर्ण होने पर शोध, नवोन्मेषी और गुणवत्ता अंकन पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता आत्मीय विश्वविद्यालय राजकोट गुजरात के प्रो. प्रीतम जोशी, गुरुकुल कांगड़ी विश्विद्यालय हरिद्वार उत्तराखंड से रहे। उन्होंने गुणवत्तापूर्ण रिसर्च और रिसर्च के लिए उपलब्ध वित्तीय संसाधन तथा रिसर्च फंड मैनेजमेंट पर विस्तार से व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ कुलपति प्रो. एन.के. तनेजा और उपकुलपति प्रो. वाई. विमला के किया। शामली से कनिका ने कर्णप्रिय सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। वेबिनार संयोजक प्रो. शिवराज पुंडीर ने वेबिनार की थीम से परिचित कराया और बताया कि यह वेबिनार शोध कार्य के लिए आधुनिक तकनीक की सुविधाओं से शिक्षा जगत को परिचित कराने के उद्देश्य से आयोजित किया गया है। वेबिनार सहसंयोजक डॉ. अजय बाबू शर्मा ने वेबिनार का संचालन किया। वेबिनार में विश्विद्यालय के सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, अन्य सम्बद्ध विश्विद्यालयों तथा उत्तराखंड और गुजरात के विश्वविद्यालयों के प्राचार्य, प्राध्यापक और शोधार्थी जुड़े। वक्ताओं के परिचय के लिए मॉडरेटर के रूप में डॉ. एकता चौहान तथा डा. राकेश कुमार ने सहयोग किया। टेक्निकल सपोर्ट संदीप, सुनील, सौभाग्या द्वारा प्रदान की गई।

साइंटिफिक सोशल रिस्पांसिबिलिटी' के लिये प्रोत्साहित किया

परिसर संवाददाता

मेरठ। विश्वविद्यालय ने सर्ब (साइंस एंड इंजिनीरिंग रिसर्च बोर्ड) के 'साइंटिफिक सोशल रिस्पांसिबिलिटी' कार्यक्रम के के तहत दो दिन की वर्कशॉप का आयोजन जंतु विज्ञान विभाग में किया। आयोजन प्रोफेसर संजय कुमार भारद्वाज की क्रोनोबायोलॉजी लैब ने किया। उद्घाटन दीप प्रज्वलन से हुआ, जिसकी अध्यक्षता कुलपति प्रो. एन.के. तनेजा ने की। कुलपति ने अपने उद्बोधन में सभी कॉलेज के शिक्षकों को शोध में रुचि दिखाने की बात कही। साथ ही समाज में विज्ञान और शोध की उपयोगिता को बढ़ावा देने के लिये प्रेरित किया। प्रथम सत्र में प्रोफेसर मेवा सिंह (मैसूर विश्वविद्यालय) ने वन्य जीव संरक्षण के बारे में जानकारी दी। उन्होंने विलुप्तप्राय लायन टेल्ड मकाक और हाथियों के संरक्षण एवं प्रबंधन के विषय में बताया। प्रो. राकेश सेठ (जंतु विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने पर्यावरण और विज्ञान में कीटों का महत्व बताया। प्रो. भानु प्रताप सिंह ने 'साइंटिफिक सोशल रिस्पांसिबिलिटी' के बारे में सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया। प्रोफेसर भारद्वाज ने वर्कशॉप के बारे में बताया। विभागाध्यक्ष प्रोफेसर नीलू जैन गुप्ता ने जंतु विज्ञान विभाग के बारे में जानकारी दी। कुलपति ने फिश एक्वेरियम फैसिलिटी का लोकार्पण भी किया तथा एनिमल हाउस का दौरा किया।

प्रकाश की खोज में तत्पर देश है भारत: जगूड़ी

आजादी का अमृत महोत्वस मंथन सेमिनार श्रृंखला में सांस्कृतिक पक्ष पर सेमिनार

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित आजादी का अमृत महोत्सव मंथन सेमिनार श्रृंखला के अंतर्गत चार अगस्त को सांस्कृतिक पक्ष विषय पर सेमिनार आयोजित किया गया। इसमें विशिष्ट वक्ता पद्मश्री लीलाधर जगूड़ी ने भारत शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि भारत में भा$रत का अर्थ हुआ प्रकाश में रत। प्रकाश की खोज में निरंतर तत्पर रहने वाला देश है भारत। समय की अवधारणा निश्चित नहीं है। स्वप्न और यथार्थ के बीच समय का मूल्यांकन करना, उसे किसी निश्चित सीमा में बांधना कठिन है।

उन्होंने कहा कि हिंदी साहित्य में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का प्रभाव हिंदी साहित्य को समृद्धि की ओर ले जाता है। 18वीं शताब्दी में प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना से ज्ञान का जो विस्तार हुआ उस कड़ी को द्विवेदी जी सरस्वती पत्रिका के प्रकाशन के साथ आगे बढ़ाते हैं। सरस्वती पत्रिका का सबसे बड़ा अवदान लिखित साहित्य को सामने लाना रहा है।

उन्होंने कहा कि साहित्य की कोई पार्टी नहीं होती। साहित्यकार को साहित्य कर्म का कार्यकर्ता होना चाहिए। भारतीय दर्शन तर्कशास्त्र के आधार पर विचारधाराओं, सामाजिक संरचना एवं धर्म की व्याख्या करता है। शास्त्रों को भी तर्कों के माध्यम से परखा गया है। भारतीय पौराणिक आख्यानों में अवतारवाद की व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि धर्म की त्रुटियों को दूर करने के लिए अवतारवाद की अवधारणा प्रारंभ हुई।

उन्होंने कहा कि ट्रांसफर ऑफ पॉवर समाज से ही उत्पन्न होती है। अवतारवाद को विकासवाद की दृष्टि से देखना चाहिए। हमारे अवतारी चरित्र हमें विकास करना सिखाते हैं, रचनात्मकता के साथ जीवन जीने की शिक्षा देते हैं। भारतीय संत परंपरा इस दृष्टि से विलक्षण है।

तुलसी और कबीर के प्रति आलोचकों की दृष्टि पर भी उन्होंने चर्चा की। उन्होंने कहा कि रचनाकार को हर तरह का जीवन जीना होता है इसलिए उसे दुनिया की नब्ज का पता होना चाहिए। दुनियादारी की समझ ही उसे एक ईमानदार साहित्यकार

-पद्मश्री लीलाधर जगूडी।

बनाती है। साहित्यकार अपने प्रत्येक चरित्र में जीवन जीता है। हिंदी भाषा के संदर्भ में उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा बहुत समृद्ध और व्यापक भाषा है और आगामी 25 वर्षों में हिंदी भाषा और साहित्य ज्ञान और विज्ञान के नए मार्ग प्रशस्त करेंगे।

विशिष्ट वक्ता, इग्नू, नई दिल्ली के समकुलपति प्रो॰ सत्यकाम ने कहा की साहित्य भविष्य मुखी होता है। साहित्य सच लिखता है। आजादी से पूर्व और आजादी के बाद लिखा गया साहित्य सामाजिक सरोकारों का साहित्य था। साहित्य वर्तमान रचता है लेकिन अतीत को साथ लेकर चलता है। आजादी के बाद आजादी से पूर्व देखे गए स्वप्न का मोहभंग होता है। जहां सामाजिक व्यवस्था समाजवादी न होकर पूंजीवादी व्यवस्था में परिवर्तित होती है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, भाषा का तेजी से पश्चिमीकरण होने के कारण भारत को इंडिया बना दिया जाता है। उन्होंने कहा कि भीष्म साहनी, राही मासूम रजा जैसे कई साहित्यकार आजादी के बाद उत्पन्न हुई समस्याओं को अपने रचना कर्म में अभिव्यक्त करते हैं। विवेकी राय ने विकास की अवधारणा को सड़क से जोड़कर देखा कि गांव का विकास किस प्रकार से संभव हो। इस बारे में उन्होंने अपने उपन्यासों में लिखा। आजादी के बाद स्त्री चिंतन बहुत व्यापक रूप में हमारे समक्ष आया। उन्होंने कहा कि हिंदी साहित्य में एक बहुत बड़ा वर्ग स्त्री लेखिकाओं का हुआ जिन्होंने बहुत ही समृद्ध साहित्य की रचना की। जैनेंद्र आजादी से पूर्व और आजादी के पश्चात नई दृष्टि से रचना कर्म कर रहे थे। आगामी 25 वर्षों में जो साहित्य रचा जाएगा, वह निश्चित ही भारतीय संस्कृति और समाज के स्वर्णिम विकास का योग होगा। उन्होंने कहा किभारतीय संस्कृति के मूल उच्च को समझना अपने अस्तित्व की पहचान है। भारतीय संस्कृति की जड़ें बहुत मजबूत है। भारतीय साहित्य में जन-जन की बात की जाती है और साहित्य समाज का सच लेकर ही ही आगे बढ़ता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं प्रतिकुलपति प्रो. वाई. विमला ने कहा कि हर विषय का साहित्य होता है। विज्ञान विषय का भी अपना साहित्य है। आज के समय का एक बहुत बड़ा प्रश्न है भारतीय समाज में तेजी से पनपता अवसाद। आगामी 25 वर्षों में हमें ऐसे साहित्य का सृजन करना होगा जो सामाजिक संरचना को सुदृढ़ बनाए। अवसाद से लोगों को निकाले और मानवता का संरक्षण करें। भारतीय दर्शन आशावादी है। साहित्य यथार्थ का सृजन करता है और उस यथार्थ पर अभिव्यक्ति के साथ आशावाद का वर्णन भी साहित्य में होना चाहिए।

कार्यक्रम के संयोजक प्रो॰ नवीन चन्द्र लोहनी ने सभी का स्वागत किया। अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन प्रो॰ रूप नारायण ने किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के अनेक प्रोफेसर, अधिकारीगण, शिक्षक और संबद्ध महाविद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक और छात्र-छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

-'विभाजन की विभीषिका' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में मंचासीन अतिथि।

'आकर्षक व्यक्तित्व व अभिनव सोच रोजगार के लिए जरूरी'

परिसर संवाददाता

मेरठ। आकर्षक व्यक्तित्व और अभिनव सोच रोजगार प्राप्त करने के लिए बहुत ही आवश्यक है। छात्रों को यदि जीवन में आगे बढ़ना है तो कठोर परिश्रम करें, ज्ञान अर्जित करें और अपने अंदर कौशल विकसित करें। ये बातें संस्थान के पूर्व छात्र और गोल्डन ग्लोब टेक्नोलॉजी के संस्थापक एवं सीईओ हर्ष दत्ता ने एल्मा कनेक्ट लाइव वेबिनार के दौरान कहीं। संस्थान के ही पूर्व छात्र और अब एचसीएल टेक्नोलॉजी के प्रोडेक्ट मार्केटिंग लीडर अर्पित रस्तौगी ने मॉडरेटर के रोल में वक्ता के साथ विस्तार से चर्चा करते हुए महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही प्रति कुलपति प्रो. वाई विमला ने कहा कि जीवन में सफलता का केवल एक ही रास्ता है वह है कठोर परिश्रम। कठोर परिश्रम के साथ कौशल विकास व ज्ञानार्जन भी बहुत आवश्यक है। एसीआरआईईटी के निदेशक प्रो. जयमाला ने स्वागत उदबोधन व श्रृंखला की जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन सविता मित्तल ने किया। इस दौरान सौरभ गौड, निधि भाटिया, अर्पित छाबडा, शिवम गोयल, डॉ. मानव बंसल, संदीप अग्रवाल, पंकज कुमार, विवेक मिश्रा, प्लेसमेंट अधिकारी अनुज कुमार, मनु शर्मा, छात्रा निकिता शर्मा, शुभांगी शुक्ला, पीयूष बत्रा आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम का लाइव प्रसार यूटयूब के माध्यम से किया गया।

विश्व का नेतृत्व वही करेगा, जो नए ज्ञान का सृजन करता रहेगा

परिसर संवाददाता

मेरठ। ज्ञान आधारित इस विश्व अर्थव्यवस्था में वही राष्ट्र आगे बढ़ पाएंगे और विश्व का नेतृत्व कर पाएंगे जो नए ज्ञान का सृजन निरंतर कर रहे हैं। विश्वविद्यालय इस नए ज्ञान के सृजन में नई तकनीक के अविष्कार में नेतृत्व प्रदान करने का कार्य कर रहा है।

नई शिक्षा नीति 2020, जो गत वर्ष जुलाई में लागू हुई उसने हम सबको यह सुनहरा अवसर प्रदान किया है कि शिक्षा व्यवस्था में, खासकर उच्च शिक्षा में जो विद्यार्थी प्रवेश ले रहे हैं, उन विद्यार्थियों के लिए ज्ञान संवर्धन के नए और अधिक अवसर उत्पन्न हों। ये बातें चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर नरेंद्र कुमार तनेजा ने 75वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में कहीं।

उन्होंने कहा कि यहां यह भी मानना है कि जो भी व्यक्ति जन्म लेता है उसमें कोई ना कोई गुण अवश्य विद्यमान होता है। यह पूरे शिक्षा के ढांचे का दायित्व बनता है कि हम उस गुण की पहचान कर उस विद्यार्थी को अवसर उपलब्ध कराएं।

उन्होंने कहा कि अपनी इस स्वाधीनता को अक्षुण्ण रखने के लिए वैसे तो सभी नागरिकों का बड़ा कर्तव्य है, परंतु शिक्षा क्षेत्र में काम करने वाले का उत्तरदायित्व और बड़ा बन जाता है। छात्र अपने व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास करें, अपने परिवार, समाज, मानवता के लिए काम करें।

इस समय हम सबके सामने नई चुनौती है। इस युग में ज्ञान की चुनौती तो है ही, इसके अलावा पर्यावरण नई चुनौती प्रस्तुति कर रहा है। विश्व को बचाने के लिए पर्यावरण को बचाना सबका दायित्व बनता है, इसलिए पर्यावरण को बचाने के लिए सभी अपना योगदान प्रस्तुत करें।

इससे पूर्व कुलपति ने विश्वविद्यालय में महापुरुषों की मूर्तियों पर माल्यार्पण किया।

भारत माता को अखंड देखना चाहते थे महर्षि अरविंद: अजय मित्तल

परिसर संवाददाता

महर्षि अरविंद के लेख के कारण देश में अखंड आजादी की ज्योति जली

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग और विश्व संवाद केंद्र की ओर से महर्षि अरविंद की जयंती के उपलक्ष्य में 'विभाजन की विभीषिका' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

मुख्य वक्ता और विचारक व चिंतक अजय मित्तल ने कहा कि महर्षि अरविंद भारत माता को अखंड देखना चाहते थे। भारत का विभाजन होने पर उनको बहुत ठेस पहुंची थी। महर्षि के विचारों ने पूरे कालखंड को प्रभावित किया था।

वह हमेशा कहते थे कि भारत विश्व गुरु बनने वाला है। महर्षि अरविंद के लेख के कारण ही देश में अखंड आजादी की ज्योत जली थी। वह समाज को ईश्वर के दर्शन भारत माता के रूप में कराना चाहते थे। वे कहते थे कि भारत माता एक ऐसी मानवीय चेतना है, जो सामने आकर अपना रूप धारण कर सकती है।

अजय मित्तल ने कहा कि महर्षि अरविंद ने सांस्कृतिक विचार को दुनिया के सामने रखा। वे कहते थे कि यदि देश का विभाजन हुआ तो भारत की महानता पर ग्रहण लग जाएगा। उन्होंने पत्रकारिता में भी नए आयामों को स्थापित किया। उनके लेख पढ़ने के लिए लोग उत्सुक रहते थे। उनके लेखों ने देश में एक नई क्रांति को जन्म दिया और उनके लेखों से लाखों युवा प्रभावित हुए। अजय मित्तल ने कहा कि महर्षि अरविंद के विचारों से प्रभावित होकर सुभाष चंद्र बोस ने सिविल सेवा से त्यागपत्र दे दिया था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संतोष शुक्ला ने कहा कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में महर्षि अरविंद का बहुत बड़ा योगदान था। उन्होंने चेतना के विकास का सिद्धांत दिया। महर्षि अरविंद कहते थे कि हर व्यक्ति में महामानव बनने की क्षमता है।

नियमित योग से हम अपने अंदर की चेतना को जगा सकते है। उन्होंने कहा कि उनके बारे में जानना गौरवपूर्ण है। इंग्लैंड में रहते हुए भी उन्होंने अपने देश प्रेम को जागृत रखा। महर्षि अरविंद का व्यक्तित्व अद्भुत था। हर कोई उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता था। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के निदेशक एवं आचार्य प्रोफेसर प्रशांत कुमार ने कहा कि महर्षि अरविंद ने पत्रकारिता को एक नया आयाम दिया। देश को आजाद कराने में उनके लेखों की महत्वपूर्ण भूमिका थी क्योंकि उनके लेख पढ़कर ही हजारों युवाओं को प्रेरणा मिली और वह युवा आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। प्रोफेसर प्रशांत कुमार ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव जी ने किया। इस दौरान प्रांत प्रचार प्रमुख सुरेंद्र कुमार, सुमंत कुमार, अमरीश पाठक, वीनस शर्मा, मितेंद्र गुप्ता, ज्योति वर्मा, अनुज कुमार, उपेश दीक्षित, राकेश कुमार एवं विभाग के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

'देश के विकास की कुंजी है तकनीकी विकास'

अमृत महोत्सव मंथन सेमिनार श्रृंखला के अंतर्गत विशेषज्ञों ने आर्थिक पक्ष पर प्रकाश डाला

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित आजादी का अमृत महोत्सव मंथन सेमिनार श्रृंखला के अंतर्गत 10 अगस्त को आर्थिक पक्ष विषय पर सेमिनार आयोजित किया गया। विशिष्ट वक्ता, आईएसआईडी, नई दिल्ली के निदेशक प्रो. नागेश कुमार ने कहा कि 1700 ई० पूर्व भारत दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे समृद्ध अर्थव्यवस्था थी और स्वतंरत्रता के समय भारत दुनिया की सबसे कमजोर अर्थव्यवस्था में तब्दील हो गई थी। पिछले कुछ वर्षों में देश में 97 प्रतिशत व्यक्तियों तक बिजली की सुविधा पहुंच गई है। 1995 में यह 50 प्रतिशत और 2010 में 76 प्रतिशत थी। स्वच्छ भारत मिशन भी सफल रहा।

उन्होंने कहा कि अधिकतर क्षेत्रों में भारत सर्वभौम नेतृत्व कर रहा है। जैसे आई.सी.टी., सॉफ्टवेयर उद्योग, जैविक दवाइयां, वैक्सीन निर्माण, ऑटोमोबाइल दुपहिया वाहन निर्माण, दूध उत्पादन, चावल, गेहूं, चीनी, मूंगफली, सब्जियां, सूत और फलों के उत्पादन में भारत अग्रणी है। कोराना महामारी में जहाँ विश्व की तमाम अर्थव्यवस्थाएं संघर्ष कर रही हैं और बड़ी संख्या में रोजगार गए हैं, ऐसे मंत भारतीय शासन व्यवस्था की नीतियाँ रोजगार और अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भी सफल रही हैं।

दूसरे विशिष्ट वक्ता, आईआईटी रुड़की के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डी.के. नौटियाल ने कहा कि एक हजार वर्ष पूर्व चीन और भारत विश्व की लगभग 50 प्रतिशत जी.डी.पी. में सहभागी थे। कई उतार-चढ़ाव के पश्चात विश्व बैंक के अनुसार 2020 में विश्व की कुल जीडीपी में भारत की हिस्सेदारी लगभग 4 प्रतिशत रह गई। विश्व के कुल क्षेत्रफल में भारत की हिस्सेदारी 2.45 प्रतिशत, जनसंख्या में लगभग 16 प्रतिशत है। विश्व के कुल क्षेत्रफल में चीन की हिस्सेदारी 7 प्रतिशत, जनसंख्या में 22 प्रतिशत है। विनिर्माण के क्षेत्र में भी भारत लगातार प्रगति कर रहा है। लेकिन तकनीक के क्षेत्र में चीन ने जो विकास किया है, वह भारत के लिए अनुकरणीय है। तकनीकी विकास देश के विकास की कुंजी है। उन्होंने विश्व भर की आर्थिक प्रगति के अनेक विश्लेषण प्रस्तुत किए और भारत की वस्तुस्थिति से अवगत कराया। अध्यक्ष के रूप में कुलपति प्रो० नरेंद्र कुमार तनेजा ने कहा कि मेक इन इंडिया का मतलब है कि अपने स्वदेशी उद्योगों में निवेश कर देश की अर्थव्यवस्था को ऊपर उठाना। भारतीय रणनीतिकारों का लगातार प्रयास है कि ऐसी योजनाओं को लाया जाए जो निचले तबके को लाभ पहुँचाए जैसे-जनधन और उज्ज्वला योजना। पिछले कुछ वर्षों में शासन का प्रयास है कि प्रत्येक क्षेत्र में विकास कार्य सुचारू रूप से होते रहें। बड़ी संख्या में शोध के नए नए क्षेत्रों में कार्य किया गया। बैंकों का निजीकरण और अन्य कार्य अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए किए गए। साथ ही राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इसी क्रम में एक महत्वपूर्ण कार्य है। उन्होंने भारत की आर्थिक स्थिति के उज्जवल पक्ष की चर्चा की और कोरोना काल की विपरीत परिस्थितियों में देश के आगे बढ़ने की ओर ध्यान आकर्षित किया।

कार्यक्रम के संयोजक प्रो० नवीन चन्द्र लोहनी ने कहा कि आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम की यह सातवीं श्रृंखला है। कार्यक्रम में प्रो० अतवीर सिंह ने प्रो० नागेश कुमार का परिचय कराया और उनकी अंतरराष्ट्रीय उपलब्धियों का जिक्र किया। अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन प्रो० रूप नारायण ने किया। उन्होंने कहा कि भारत का आर्थिक पक्ष बताता है कि भविष्य उज्जवल है।

वैज्ञानिक पक्ष पर मंथन सेमिनार आयोजित

परिसर संवाददाता

मेरठ। वैज्ञानिक पक्ष विषय पर मंथन सेमिनार 27 जुलाई को आयोजित हुआ। इसमें विशिष्ट वक्ता और भारत सरकार के अंतरिक्ष विभाग के राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र हैदराबाद के क्षेत्रीय केंद्र के मुख्य महाप्रबंधक डॉ. चंद्रशेखर झा ने कहा कि वर्तमान केंद्र सरकार के प्रयासों से इसरो काफी तेजी से आगे बढ़ रहा है। जल संरक्षण के साथ-साथ मृदा संरक्षण के क्षेत्र में भी हम काम कर रहे हैं। भूकंप, तूफानों, मृदा खनन, वनों का कटान, मछुआरों को मछलियों की सही लोकेशन बताना, भूजल का क्षेत्र चिन्हित करना, जैव विविधता, कार्बन की स्थिति, मौसम संबंधी जानकारियां और गांवों में विकास संबंधी कार्यों को हम कर रहे हैं, जिनका फायदा आम जनमानस को प्राप्त हो रहा है। अध्यक्षता करते हुए प्रतिकुलपति प्रो. वाई. विमला ने कहा कि विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करके केंद्रीय निधि से वैज्ञानिक नवाचारों को सहायता करनी चाहिए।

-विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के दौरान उप मुख्यमंत्री और उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. दिनेश शर्मा को पौधा भेंट करते कुलपति प्रो. एन.के. तनेजा (बांए) और समारोह में उपस्थित गण्यमान्य अतिथिगण और छात्र-छात्राएं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति भारत को करेगी जाग्रत: आनंदीबेन

-समारोह के दौरान राजा महेंद्र प्रताप की प्रतिमा का लोकार्पण भी किया गया।

परिसर संवाददाता

मेरठ। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक हिन्द स्वराज्य में शिक्षा के मुद्दे को पूरी गंभीरता से रेखांकित कर अंग्रेजी शिक्षा और सभ्यता को भारत के लिए विनाशकारी बताया था। देश का दुर्भाग्य यह था कि 1947 के बाद सत्ता जिनके हाथों में आई थे, वे स्वयं गांधी जी के हिन्द स्वाराज्य को काल बाहय अभिलेख मातने थे। इसलिए भारत कहीं नेपथ्य में चला गया और इंडिया मंचीय व्यवस्था का महत्वपूर्ण घटक हो गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति मात्र शिक्षा का अभिलेख नहीं है बल्कि भारत के चित को प्रतिस्थापित कर विराट को जाग्रत करने का साधन है। सीसीएसयू के दीक्षांत

समारोह में कुलाधिपति एवं राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने छात्र-छात्राओं को ऑनलाइन संबोधित करते हुए यह बात कही।

कुलाधिपति ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 स्वामी विवेकानंद के विचारों को समाहित करके देश के सम्मुख उपस्थित हुई है। यह भारत की श्रेष्ठता को भी व्यवहार में लाकर भारत को विश्वगुरू के सिंहासन पर प्रतिस्थापित करने के लिए कटिबद्ध है।

विवि की भूमिका को सराहा

कुलाधिपति ने सीसीएसयू से संबद्ध 10 कॉलेजों को मॉडल या नोडल सेंटर के रूप में स्थापित करने की प्रशंसा की। कुलाधिपति ने कोरोना काल में प्रतिदिन चार हजार भोजन पैकेट उपलब्ध कराने, ऑनलाइन कक्षाएं चलाने और पोर्टल पर ई-कंटेंट उपलब्ध कराने में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय की भूमिका की सराहना की। कुलाधिपति ने कहा कि विश्वविद्यालय तकनीक से छात्रों को शेष दुनिया से जोड़ते हैं।

विश्वविद्यालय से शुरू हो रोजगार परक कोर्स- दिनेश शर्मा

परिसर संवाददाता

मेरठ। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के 32वें दीक्षांत समारोह में प्रदेश के उप मुख्यमंत्री एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ0 दिनेश शर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालयों में रोजगारपरक कोर्स शुरू होंगे। विश्वविद्यालय ने कोरोना काल में अच्छा काम किया है। छात्रों के समरूत शैक्षिक प्रमाणपत्रों को ऑनलाइन किया जा रहा है। जल्द ही प्रदेश में शिक्षा सेवा चयन आयोग अस्तित्व में आ जाएगा।

डॉ शर्मा ने कहा कि जल्द ही प्रदेश में समस्त विवि में 70 फीसदी कोर्स समान हो जाएगा। 30 फीसदी कोर्स विवि अपने स्तर पर स्थानीय जरूरतों के अनुसार तैयार कर सकेंगे। प्रदेश के नए राजकीय महाविद्यालयों में सेल्फ फाइनेंस स्कीम में कोर्स चलेंगे जो सबंधित विवि चलाएंगे। उन्होंने औद्योगिक इकाइयों के साथ एमओयू करने और विदेशी विवि के प्रदेश में जल्द कैंपस खोलने की बात कही।

लड़कियों की भागीदारी से बदल रहा समाज

डॉ. दिनेश शर्मा ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में लड़कियों की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया जाता था, लेकिन अब समय बदल है। समारोह में 80 फीसदी लड़कियों ने मेडल पाए हैं, यानि न केवल समाज बदल रहा है बल्कि लड़कियां बेहतर प्रदर्शन कर रही हैं।

-दीक्षांत समारोह के दौरान कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की छात्राओं को उपहार भेंट किए गए।

-दीक्षांत समारोह के दौरान एन.सी.सी कैडेटों के साथ अतिथि और कुलपति।

स्वार्थी मत बनो, दूसरों की मदद करो

परिसर संवाददाता

परिसर संवाददाता मेरठ। स्वार्थी मत बनो, सपनों को हासिल करने के लिए दूसरों की मदद करो। यह आपके सम्मान, निष्ठा और सहयोग में सहायक होगा। विद्यार्थी किताबें पढ़ें, खुद को अपडेट रखें, दुनियाभर में होने वाली घटनाओं से खुद को परिचत कराएं। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के 9 मार्च को हुए दीक्षांत समारोह में गुजरात विवि के पूर्व कुलपति प्रो एम.एन. पटेल ने मेधावी छात्रों से यह आहवान किया।

प्रोफेसर पटेल ने कहा कि दुनिया ऊपर से नीचे तक बदल सकती है, लेकिन मूल नैतिक मूल्य कभी नहीं बदलेंगे। ये मूल्य ईमानदारी, सच्चाई, स्वयं और दूसरे का सम्मान, कड़ी मेहनत, व्यक्तिगत अखंडता और सामुदायिक भागीदारी हैं। प्रोफेसर पटेल ने कहा कि वर्तमान में हम सभी की यह जिम्मेदारी है कि मूल नैतिक मूल्यों को पराजित न होने दें। प्रोफेसर पटेल ने कहा कि यह चिंता का विषय है कि हमारी शिक्षा प्रणाली हमारे युवाओं को जीवन में सफलता के लिये कठोर एवं सतत परिश्रम से परिचित नहीं कराती। उन्होंने क्षमताओं पर संदेह न करने, कठिनाइयों से खतरा महसूस न करने और विश्वास न खोने की अपील की।